ओम शांति,

आज हम एक बहोत अच्छा टॉपिक लेंगे और आप इस्पे चिंतन भी करेंगे। हमें बाप सामान बनना है। कल बाबा मुरली में केह रहे थे अंत में तुम्हे बहोत साक्षत्कार होंगे, किन्हे होंगे? जो योगयुक्त होंगे, जो अंत तक रहेंगे। तो **हमें साक्षात्कार भी होंगे और हम भी साक्षात्कार कराएँगे और साक्षात्कार कराना यह उनके द्वारा ही होगा जो बाप सामान होंगे।** तो जैसे बाबा के संस्कार वैसे ही हमारे संस्कार हो, जैसा बाबा का चिंतन वैसा ही हमारा चिंतन हो, जैसे बाबा के बोल वैसे ही हमारे हो सभी चिंतन करेंगे।

में एक दो बात से शुरू कर देता हूँ इसमें दोनों ब्रह्मा बाबा भी और शिवबाबा भी। ब्रह्मा बाबा ने सारे गुणो और संस्कार प्रैक्टिकल कर्मो के द्वारा दिखाएं और शिवबाबा को हम उसकी मुरलियों से, या अपने योग के अभ्यास से पहचानते जाते है। शिवबाबा को पहचानना केवल बुद्धि के द्वारा ही संभव नहीं होता, देखते है हम उसे सामने कैसा है वोह? उसकी फीलिंग्स कैसी है? भोला नाथ है तो क्या है इसका मीनिंग? प्यार का सागर है कैसे सब में प्यार बांटता है? तो बाबा कि एक बहोत बड़ी महानता उदारता, खुला दिल, खुले विचार। सभी इस बात को बहोत अच्छी तरह जानते होंगे क्या है उदारता? सोचलें सभी। उदार होना अर्थात कंजूस ना होना सीधी भाषा। विशाल दिल होना, जो उदारचित होते है वोह छोटी छोटी बातों में नहीं अटकते, उनकी परवाह नहीं करते, छोटी छोटी बातें उनके लिए कुछ नहीं होती। आजकल संसार छोटी छोटी बातों में उलझ गया है इसने मुझे मान नहीं दिया, इसने मुझे ऐसे शब्द बोले बहोत मनुष्यो पर दुसरो के बुरे शब्दो का बुरा असर ज्यादा होता है।

बाबा हर फील्ड में उदारचित थे। हम जानते है जब बाबा यहाँ थे साकार में तब यज्ञ कि आर्थिक स्थिति कोई बहोत बड़ी नहीं थी, यज्ञ में कोई बहोत ज्यादा धनसम्पत्ति नहीं थी तो भी बाबा कहा करते थे बच्चे खानेपीने में, वस्त्रो में ज्यादा खर्च नहीं होता इसलिए खानेपीने कि चीज से किसी को तंग नहीं करना चाहिए। घरो में कई लोग बड़े कंजूस होते है पैसा भी होता है लेकिन ना उस पैसे का सुख सवयम लेते ना परिवार को दे पाते, देखें होंगे आपने बहोत परिवार? आपमें से कोई माता बैठी हो और ऐसा करती हो वोह जरा उदार करें अपने को। यह नहीं कि अच्छा अच्छा माल सब अलमारियों में बंध, दूध आये तो फ्रिज में बंध ताला लगा दिया पर जब देखा कि अब तो यह ख़राब हो ही जायेंगे तो खिलाई ही देना चाहिए नहीं तो लोग कहेंगे कि देखा सारे ख़राब कर दिए। जिन जिन का भी यह संस्कार सोचलें वोह बाप सामान संस्कार नहीं है हमें बाप सामान बनना है तो संस्कारो कि समानता आवश्यक है।

ऐसे ही ब्रह्मा बाबा का एक गुण संस्कार आपने सुना होगा **तुरंत करो, अभी अभी करो। जो डिले करते जो चलते रहते है आज नहीं कल करेंगे वोह बाबा को पसंद ही नहीं थे। अभी करो इसको ही बाबा फरमानबरदार कहते, फरमान मिला और करने लगे इससे ही भोलानाथ राजी हो जाता है, वरदान दे देता है।** आप सभी ने सायद जगदीश भाई कि कहानी सुनी हो कैसे उन्हें लिखने का वरदान मिला और बाबा ने कैसे उन्हें निमित्त बना दिया अपने बहोत बड़े काम में जो कि साहित्य किसी भी समाज का दर्पण होता है। जितना सुंदर साहित्य किसी के पास होगा उतना ही सुंदर प्रभाव समाज पर उसका पड़ता है तो जगदीश भाई ने साहित्य कि रचना कि। सुना देता हूँ आपको वोह कहानी जगदीश भाई आये बाबा के पास और भी कुछ भाई बहने थे बाबा ने काम दिया कुछ रात्रि क्लास में कि कल सभी बच्चे इस पर लिख कर लाएं। अचानक लाइट चली गई रात को, नौ बजे क्लास होती थी फिर चली गई लाइट बहुतो ने सोच लिया अब तो लाइट ही नहीं है बाबा को भी पता है कि लाइट चली गई है कल लिखेंगे बाबा तो जानते ही है लाइट नहीं थी लेकिन जगदीश भाई ने नहीं सोचा उन्होंने सोचा सद्गुरु का आर्डर है अभी करना है। वोह बहार आये और जो थोड़ी सी लाइट जल रही थी उसके निचे बैठ कर लिख दिया। सवेरे जब बाबा ने पूछा कि किस किस ने लिखा? तो केवल एक जगदीश भाई ही थे, राजी हो गया भगवान्।

सब कुछ सुख सुविधाएं हो और फिर हम उसकी आज्ञा का पालन करें तो हमारा महत्व नहीं, कुछ ना हो असम्भव हो वोह चीज और हम बाबा कि आज्ञाओं का पालन करें। बस राजी हो गया था भोला नाथ और वरदान दे दिया अब से तुम लिखा करो। तो देखिये बाबा का यह बहोत बड़ा गुण था संस्कार था हम भी इस संस्कार को अपने अंदर अपनाएं। सोचेलें अपने को देखलें जो कुछ बाबा हमें करने को कहते है वोह हम करते है या सोचते है कुछ और है। सब अपने चिंतन पे दृस्टि डालें बाबा ने कहा फ़रिश्ते कि ड्रेस पहनो, बहुतो ने सोच लिया होगा हम तो बहोत बीजी है अपने बस का नहीं है जो सरंडर है वोह कर सकते है। बहुतो ने सोच लिया होगा कुछ दिन करके फिर रोज रोज कर के तो बोर हो रहे है ड्रेस दूसरी चाहिए अब तो एक ड्रेस पहनते पहनते बोर हो जाते है ना? इसलिए बाबा ने हमको सफ़ेद ड्रेस दे दी कि बोर हो ही नहीं। तो छोड़ दिया है अभ्यास करना लेकिन जिन्होंने दृढ़ता पूर्वक अभ्यास चालू रखा है, उन्हें बाबा का बल मिलता ही रहेगा और नए नए अनुभव होते ही रहेगे। इसलिए अभी अभी करो, बहोत राजी होते है बाबा अगर हम यह बात जानते नहीं तो जान लेनी चाहिए, मान लेनी चाहिए। लौकिक में भी येही है आप के घर में काम है आप उन्हें काम करने को कहो वोह तुरंत करदें तो कितना अच्छा लगेगा? प्यार बढ़ जाएगा बच्चो से और जो बच्चे काम चलाते है उन्हें आप फिर काम कहेंगे भी नहीं यह तो करता नहीं है। बाबा भी हमें काम देता है तुरंत करने से परिणाम बहोत सुंदर मिलते है।

अब आप आगे चिंतन करेंगे कौन कौनसे है बाबा के संस्कार? **बेफिक्र बादशाह है बाबा।** बहोत बड़ी क्वालिटी रही है शिवबाबा तो है ही बेफिक्र। इसके साथ में एक चीज और जोड़ दूँ साक्षीभाव। तो बाबा तो बेफिक्र है ही लेकिन ब्रह्मा बाबा भी अपने पुरे जीवनकाल में बेफिक्र रहे। सब ने यज्ञ का इतिहास सुना है शुरू से विरोध प्रारम्भ हुआ, बेगरी पार्ट आया जो बहोत एक ऐसा समय था किसी भी माबाप के लिए कैसी दयनीय स्थिति हो सकती है उसके पास तीनसौ बच्चे खाने वाले हो और खिलाने को कुछ ना हो। लेकिन यह बाबा कि नीचे कि ऐसी सुंदर परीक्षा, सूक्ष्म परीक्षा थी जिसमें वही सम्पूर्ण पास हुए कोई चिंता नहीं, कल का कोई फ़िक्र नहीं क्या होगा? कल कहाँ से खायेंगे? ड्रामा के ज्ञान पर, शिवबाबा पर सम्पूर्ण विश्वास। आजकल हम क्या देखते है? सभी इस बात को पक्का करें अपने जीवन में आप भी देखते होंगे में बहोत देखता हूँ परिवारों में जरा सी परीक्षा आ गयी डगमगाने लगे बाबा यह नहीं कर रहा है, बाबा मदद नहीं कर रहा है।

किसी ने मुझे अभी फ़ोन किया मेरा पति मुझे छोड़के चला गया दूसरी जगह आता ही नहीं है अब अशांति करदी है घरमें क्या करूँ? बाबा क्यूँ नहीं मदद करता मुझे? में तो अठारह साल से बाबा कि बच्ची हूँ, मेने बाबा के लिए बहोत कुछ किया है, बाबा मुझे मदद नहीं करता, बाबा उसकी बुद्धि को क्यूँ नहीं थिक करता? मेने उसकी सब बात सुनी और उसको दो विधि बतायी कि ऐसा करो। अब माता कि समज में नहीं आ रही है विधि, विधि छोटी थी लेकिन उसको है बाबा करदे ना। मेने फिर उसको साफ़ बोला कि अगर तुम सोचती हो कि बाबा करदें तो वोह कर देगा लेकिन इन्तजार करो हो सकता है वोह दस साल के बाद करें। अगर तुम चाहती हो कि अभी हो जाएँ तो वोह करो जो मेने आपको अभी बतायी वोह विधि बाबा कि है मेरी थोडा ही है।

तो में देख रहा था कि आत्माएं कुछ चीजो को समज नहीं पा रही है, में एक चीज बता देता हूँ जो मेने उसको बताई सब को इस चीज का ज्ञान होना चाहिए क्यूंकि हमारा पवित्रता का मार्ग है इसमें हमें कुछ छुपाने कि आवश्यकता नहीं। मेने उससे पूछा मालूम है तुम्हारा पति क्यूँ गया है बहार? भाग नहीं गया है पर इससे अलग रहने लगा है, जा के कहता है में नहीं आउंगा तुम मेरी बात नहीं मानती। मेने इससे पूछा मालूम है तुम्हारा पति क्यूँ गया है बहार? कहा मुझे तो पता नहीं बहोत दिन से झगड़ा करता रहता था, मेने उसे बताया सब के लिए बता रहा हूँ सावधानी कि आवश्यकता है मेने उसे बताया कि उस व्यक्ति में इस समय कामविकार का रोग अति बढ़ गया है वोह इसको कण्ट्रोल नहीं कर पा

रहा है, इसलिए वोह तुमसे लड़ता है इसलिए बहार चला गया है। अगर तुम उसको रोज आधा घंटा योगदान दो में परम पवित्र आत्मा हूँ उसको पवित्र वाइब्रेशन्स दो तो उसकी यह अपवित्रता का जो वेग है वोह शांत हो जाएगा। वोह भी शांत हो जाएगा ऐसा नहीं उसका तुमसे प्यार नहीं है पर उसका प्यार क्यूंकि विकारो से भी है इसलिए अशांति हो रही है।

मेने आप सब को यह बात इसलिए कही कि **हम द्वापरयुग से जिन मनोविकारो के वश रहे थे जिन्होंने उन मनोविकारो को नष्ट नहीं किया है उसमें भी काम क्रोध आने वाले समय में यह दोनों विकार मनुष्यो को बहोत सतायेंगे और बहोत लोग ज्ञान छोड़ कर चले जायेंगे।** इसमें बात निस्चय कि नहीं होंगी निस्चय तो उन्हें है लेकिन वोह अपनी पवित्रता को कायम नहीं रख पाएंगे क्यूंकि उन्होंने ज्ञान और योग से पवित्रता को बढ़ाया नहीं है केवल दबाया हुआ है। क्यूंकि भगवान् ने कहा है कि पवित्र रहना है इसलिए रहना है लेकिन केवल यह बात किसी को पवित्रता का सुख नहीं दिला सकती योग बल के बिना आत्मा पवित्र नहीं बनती। जो लोग केवल अपनी पवित्रता को दबाएं हुए है में फिर एक बात बता देता हूँ कुछ लोग बड़े स्ट्रीक होते है पवित्रता में हमें पवित्र रहना है, कोई हमें छो भी नहीं सकता, हम कहीं बहार का भोजन भी नहीं खायेंगे लेकिन **अगर योगबल अच्छा नहीं है तो उनमें क्या दिखाई देगा? चिड़चिड़ापन, व्यवहार कि कटुता, बढ़ता हुआ ईर्षा द्वेष, आलश्य।** यह दिखाई देगा उन आत्माओ में, इसलिए हमें पवित्रता का सुख लेना है योगबल से। हम अपनी साधनाओ पर बहोत ध्यान दें बिना आत्मिक दृस्टि के, बिना अशरीरीपन के अभ्यास किये, बिना अच्छा योग लगाएं पवित्रता नेचुरल और सुखदाई नहीं हो सकती।

तो बाबा के भी संस्कार दोनों बाबा के सम्पूर्ण पवित्र। हम इस सब्जेक्ट पर बहोत ध्यान देंगे जिनको अंत तक जीने कि इच्छा है बात शरीर से जीने कि नहीं शरीर तो जब जिसका छूटेगा तब छूटेगा उस पर तो किसी का अधिकार नहीं लेकिन **जो ज्ञान में अंत तक जीना चाहते है और संसार के परिवर्तन का सुंदर खेल देखना चाहते है उन्हें अपनी पवित्रता कि शक्ति को बहोत बढ़ाना होगा।**

साक्षी भाव। बाबा शिवबाबा भी इस संसार को साक्षी होकर देखता है हमें भी संसार को साक्षी होकर देखना है। ब्रह्माबाबा ने भी सभी आत्माओ के पार्ट को साक्षी होकर देखा। रोज कम से कम एक बार सभी को साक्षी भाव कि प्रैक्टिस अवश्य करनी है। बैठ जाएँ शांत में देखें सोचें यह संसार का खेल सतयुग से कलयुग अंत तक कैसा चलता आया है चिंतन करेंगे बहोत सुंदर चिंतन, साक्षीभाव स्वदर्शन चक्र धारी होने से ही आता है, साक्षीभाव ड्रामा को सम्पूर्ण यूज़ करने से ही आता है। तो कैसे चिंतन करेंगे में याद दिला ता रहता हूँ वोह पांच बातें सभी उस पर फिर से ध्यान दें और एक टाइम निश्चित कर लें जब एक बार रोज साक्षीदृस्टा होने का ध्यान दें।

1. कितना सुंदर खेल चल रहा है यह संसार एक खेल है।
2. यहाँ सभी आत्माएं अपना अपना पार्ट बजा रही है। दूसरा संकल्प।
3. तीसरा बहोत अच्छा संकल्प जो हमें निश्चिंत करता है यहाँ सभी का अपना अपना भाग्य है, सब समान नहीं हो सकते।

जो माताएं अपने बच्चो के भाग्य कि चिंता करते है वोह चिंता करना छोड़ दें जरा, चिंता करती है ना माताएं? हमारे बच्चो का क्या होगा? सब अपना अपना भाग्य लेकर ही जन्में है आप को चिंता कि आवश्यकता नहीं आप अपनी श्रेस्ठ स्तिति से उनका भाग्य निर्माण कर सकते है। हम सभी अपने लिए भी मास्टर भाग्यविधाता है और दुसरो के भाग्य निर्माण का अधिकार भी हमें दिया गया है इसलिए भाग्यविधाता एक ब्रह्मा को कहा जाता है और दूसरा सरस्वती को भाग्यविधाता, वोह भाग्य कि रेखा खिंच देती है भक्ति में यह मान्यता है कि बच्चे ने जन्म लिया और देवी आकर रेखा खिंच जाती है और अब बाबा ने हम सब को भाग्य बनाने का सुंदर अधिकार दिया है। तो **सभी का**

भाग्य अपना अपना है चिंता कि बात नहीं अब भाग्य बढ़ाना है भाग्य हमारे हाथ में आ गया है हम उसको जितना चाहे बढ़ालें। एक समय था चारो युग हम भाग्य के हाथ रहे यह चर्चाएं संसार में भी आचार्यो के बिच होती आयी है भाग्य बढ़ा या कर्म बढ़ा? **चारो युग मनुष्य आत्माएं भाग्य के वश रही है भाग्य निर्माण भी किया है कर्म से।** क्यूंकि भाग्य निर्माण श्रेस्ठ कर्मो के द्वारा होता है सतयुग त्रेता में हम भाग्य निर्माण नहीं करते जो भाग्य हमने बनाया उसका भोग करते है, द्वारपर युग के बाद भी हम अपने कर्मो के अनुसार भाग्य पाते है और भाग्य के वश में रहते है लेकिन इस समय भाग्य हमारे अधीन है, हमारे हाथ में आ गया है भाग्य। हम जितना चाहें अपना श्रेस्ठ भाग्य बनालें योगबल से, सेवाओं से, पुण्य कर्मो से, त्याग से, वैराग्य से हमारा भाग्य बनता जाता है। बहोत अच्छा एक बाबा का महावाक्य है **प्रतिक्षण यदि तुम देह भान का त्याग करते हो तो प्रतिक्षण ही तुम्हारा श्रेस्ठ भाग्य निर्माण होता है।**

4. चौथी बात **इस संसार में जो कुछ हो रहा है वही सत्य है।** ध्यान दें आप सभी अपने को याद दिलाएंगे रोज एक बार जो कुछ हो रहा है मेरे साथ या दुसरो के साथ, यज्ञ में या यज्ञ के बहार, पॉलिटिक्स में या धर्मो के क्षेत्र में जो कुछ हो रहा है वही सत्य है वही होना चाहिए और यहाँ किसी का कोई दोष नहीं।
5. इस संसार के खेल में सभी आत्माएं एक्टर्स है निर्दोष है।

इन पांचो बातों को रोज एक बार अपने को अवश्य याद दिलाना है ताकि वोह अपने अंतर में समां जाएँ और हमारा साक्षीभाव बढ़ता जाएँ बहोत अच्छे अनुभव होंगे। में बाबा का वोह महावाक्य आपको सुना दूँ जो बहोत गहन है बहुतो के समज से परे हो सकता है **जो बच्चे साक्षी भाव में स्थित रहते है उनका एक मास का काम एक घंटे में ही पूरा हो जाता है।** ध्यान देंगे जो बहोत अच्छा चिंतन करते है चिंतन करेंगे ऐसा क्यूँ होगा? क्यूंकि साक्षी भाव से हमारी आत्मिक शक्तियां बहोत बढ़ जाएंगी इसलिए हमारी कार्य क्षमता, कार्य करने कि शक्ति भी बहोत बढ़ जाती है, कम समय में ज्यादा काम होने लगते है। दुनिया में अपने को भी हम सब देख सकते है बहोत लोग ज्यादा समय में थोडा सा काम कर पाते है आप चेक कर सकते है जिसकी जितनी योगयुक्त स्थिति उनके काम उतने ही जल्दी पूर्ण हो जाते है लौकिक में भी यह फार्मूला आप अप्लाई कर सकते है। जितनी योगयुक्त स्थिति जितनी साक्षीदृस्टा कि स्थिति काम कम समय में ज्यादा पूर्ण हो जायेंगे सभी यह प्रयोग कर के देखें अपने जीवन में।

आगे चलें बाबा का और एक संस्कार शुभ भावना शुभ भावना, सुख देने के संस्कार बाबा हमेशा मुरलियों में कहते है बाप कि दृस्टि तो नेचुरल रूप से आत्मा पर ही जाती है बाप के संस्कार तो है ही ज्ञान देने के, सुख देने के, सभी आत्माओ को आगे बढ़ाने के। हम इन तीनो बातों के ऊपर ध्यान दें, क्या बाबा जैसे ही सुखदाई हम भी बने है? क्या बाबा जैसी शुभवनाएं हमने भी अपने है? कीका बाबा जैसी हमारी दृस्टि भी आत्मा पर ही जाती है? सुख देना। कौन दे सकते है दुसरो को सुख? जो सुखो से संपन्न होंगे और दूसरी बात जिनकी जीवन में दुखो कि लहर नहीं आती जो लम्बा काल तक दुखो कि लहर से मुक्त रहे है वोह दुसरो को सुख देंगे। आने वाला समय कैसा होगा? कल बाबा कि मुरली में था बाप आते है हाहा कार को समाप्त करके जय जय कार कराने। हाहा कार होता रहा है संसार में और होता जाता है अभी सुन रहे थे ना कि कोई रोग बढ़ता जा रहा है महामारी का रूप ले सकते है रोग, अभी तो फिर भी कण्ट्रोल किया जा सकता है लेकिन ऐसा समय भी आ सकता है कि कोई रोग सारे संसार कि कंट्रोलिंग पॉवर से बहार निकल जाएँ ऐसे में हम सभी को दूसरी आत्माओ के दुःख हरने होंगे। अपनी दृस्टि और बोल से, अपने वाइब्रेशन्स से दुसरो के दुःख हरने होंगे। लम्बा काल दुखो से मुक्त रखना है खुद को, दुःख बढ़ता जा रहा है उसकी छाया हम पर ना आयें, हम ज्ञान का इतना सुंदर प्रयोग करें कि दुखो कि बातें हमें सहज दुखो को समाप्त करने का बल दें। यह नहीं दुखो में हम दुखी हो रहे अपने पास यह स्लोगन रख लें **यदि हम दुखी होते रहेंगे तो दुसरो के दुःख कैसे मिटाएंगे?** बाबा बहोत अच्छा काम दे गए ना हमें? तुम्हे मुक्ति का वरदान देना है सबको, कौन दे सकेंगे? **निर्वाण में कौन ले जा सकेंगे? जो**

कारणो का निवारण करेंगे इसका अर्थ है कोई भी कारण हमें श्रेस्ठ पुरुषार्थ से रोक ना पाएं।

सभी अपने को देख लें हर एक के पास कुछ कारण होते है हम तेज पुरुषार्थ इसलिए नहीं कर पाते हमारे पास काम बहोत है भाई, हमारा तेज पुरुषार्थ इसलिए नहीं हो पता हम अकेले ज्ञान में चलते बाकी कोई नहीं चलता सब डिस्टर्ब करते है, हमारा तेज पुरुषार्थ इसलिए नहीं हो रहा है क्यूंकि हम बहोत बूढ़े हो गए है शरीर अब साथ नहीं देना बीमार हो गए है, है ना यह कारण? और भी कारण है। माताएं कहेंगी मेरी बहु बहोत तंग करती है मुझे, तो कोई भाई कहेगा बच्चे बुरे संग में जा रहे है हमसे तो पुरुषार्थ होता ही नहीं क्यूंकि कहते है बाबा लम्बा काल का पुरुषार्थ चाहिए? ध्यान दें सभी जिनका लम्बा काल का पुरुषार्थ नहीं है अब भी छोटी छोटी परिस्थियां उनके पुरुषार्थ को जीरो पर ले आयी है अब भी यह हो रहा है और विनाश काल में यह तो प्रत्यक्ष होगा जिन्होंने लम्बा काल पुरुषार्थ नहीं किया होगा वोह कुछ नहीं कर पाएंगे। हमें उनको भी मदद करनी पड़ेगी। **जिन्होंने लम्बा काल हर तरह का पुरुषार्थ केवल योग का ही नहीं दुखो से मुक्त रहने का, अचल अडोल रहने का, एक रूस स्थिति में रहने का, त्याग और वैराग्य अपनाने का, लम्बा काल अभ्यास किया है साक्षी भाव का वोह स्थिर रेह पाएंगे।**

तो हमें स्वयं को सुखो से भरना है हमारे पास कौन से सुख है? सोचो सुख तो संसार में भी कई लोग के पास है हमारे पास है एक ही शब्द देंगे उसे ईश्वरीय सुख, अतीन्द्रिय सुख जिसके बारें में हम जानते है कल भी बाबा ने कहा अतीन्द्रिय सुख पूछना हो तो गोप गोपियों से पूछो या हमसे पूछो? माताएं क्या कहेंगी? जो कहेंगी हम से पूछो वोह हाथ उठाओ जरा? थिक है। **अतीन्द्रिय सुख उन्हें प्राप्त होता है जो आत्म अभिमानी होकर रहते है।** मुरली में आ चूका है **तुम्हारा सब से बड़ा सब्जेक्ट है आत्म अभिमानी होना, आत्मा के सातों गुणो का स्वरुप बन जाना।** केवल में आत्मा हूँ यह नहीं आत्मा के सभी गुणो का स्वरुप बन जाना। तो हमें बहोत सुख मिलता है जब हम रोज बाबा कि मुरली सुनते है वोह सुख मुरली पढ़ने से नहीं मिलेगा, या मिलता है पढ़ने से भी? कई लोग सोचते है मुरली दस बीस बार पढ़ली जाएँ वोह तो ऐसे हो गया जैसे कमजोर स्टूडेंट होते है ना लौकिक में किताब लिए बैठे ही रहते है रटते रहते है। लेकिन जो होसियार स्टूडेंट होते है उन्हें ऐसा रटने कि जरुरत नहीं होती। हमारी ज्ञान मुरली केवल ज्ञान के लिए नहीं है ध्यान दें इस बात का सुख प्राप्त करें स्वयं भगवान् अपनी आत्माओ से बात करता है यह है ना मुरली? भाषण नहीं करता बाप अपने बच्चो के बिच में भाषण नहीं किया करता, बात करता है। आप इस दृस्टि से ऐसी फिलिंग में बैठ कर मुरली सुने भगवान् मुझसे बात कर रहा है।

देखो कल बात कि थी ना? बच्चे मेने तुम्हे स्वर्ग कि रजाई दी थी, बहोत धन सम्पदा दी थी कहाँ गया? पूछ रहा था ना बाप अपने बच्चो से कि क्या किया तुमने? इतना सब कुछ दिया था सब गँवा बैठे? फिर आ गया हूँ तुम्हे तुम्हारा खोया हुआ राज दिलाने के लिए यह बात कर रहा है ना वोह हमसे? या भाषण है? देखो इस तरह मुरली सुने तो मुरली का एक घंटा बहोत सुखो में बीत जाएगा। सभी मुरली का सुख लेते भी होंगे कल से बहोत सुख प्राप्त करें इसलिए मुरली से पहले कम से कम पंद्रह मिनट आकर योग अवश्य करें यहाँ। पंद्रह मिनट अपने चित्त को स्थिर करें, संकल्प भरें भगवान् पढ़ाने आने वाला है आ रहा है अपना धाम छोड़ कर हमारा शृंगार करने, अच्छे अच्छे संकल्पो के साथ अपने को ईश्वरीय नशे में ले चलें तो मुरली का बहोत सुख आएगा। कुमार कौन कौन बैठे है हाथ उठाओ जरा? सारे ही कुमार है यह तो कुमार लोग जरा मुरली में ढीले होते है। क्यूंकि कुमारो को जरा नींद ज्यादा आती है तो सवेरे किसी को पढ़ने जाना है अब मुरली भी सुने और पढ़ने भी जाएँ यह भारी काम होता नहीं। सवेरे उठते है तो स्कूल में नींद आती है, कॉलेज में भी मुस्किल होता है यह कारण है जो हमें रोकते है। सभी अपने अंदर निस्चय करें, दृढ़ता लाएं थिक है सवेरे मुरली में नहीं जा सकते तो सामको जाएँ और मुरली का सुख प्राप्त करें। यह सुख भरते भरते आत्मा सुख संपन्न हो जायेगी, योग से भी सुख मिलता है, मुरली से भी सुख मिलता है, दुसरो को सुख देने से भी सुख मिलता है, सेवा में

आये है आप सभी सेवा में भी सुख मिलता है ना? सेवा में भी बहोत सुख मिलता है, सच्चे दिल से कि गई सेवा निस्काम भाव से, निमित्त भाव से, निस्वार्थ भाव से कि गई सेवा आत्मा कि थकान उतार देती है। और अगर इच्छा रही मेने इतनी सेवा कि मुझे पूछा ही नहीं तो थकान हो जायेगी। इसलिए निस्काम भाव से सच्चे दिल से बाबा के यज्ञ कि सेवा करते रहे भगवान् भी राजी होता है सेवा के पीछे लक्ष्य यह हो हमें यज्ञ को सम्भालना है, हमें यज्ञ कि सुरक्षा करनी है, हम अपनी श्रेस्ठ धारणाओ से यज्ञ को बल देते है, किसी कि भी कमजोर धारणाएं यज्ञ को कमजोर बनाती है, चाहे वोह सेंटर हो चाहे वोह यहाँ हो हमारी सुंदर पवित्रता यज्ञ के लिए किले का काम करती है, किसी कि अपवित्रता यज्ञ को खोखला बना देती है।

तो हम सच्चे दिल से यज्ञ के रक्षक ब्राह्मण जिन्हे यज्ञ रच कर ब्रह्मा ने हाथों में सोंप दिया है अपना यज्ञ ब्रह्मणो के। हम सब वोह ब्राह्मण है जिन पर भगवान् ने विश्वास किया है, किया है ना? यह मेरे यज्ञ को फर्स्ट क्लास चलाएंगे। हम अपनी भावनाओ को ऐसा ही श्रेस्ठ करेंगे, बल मिलेगा बाबा का सुख भरेगा आत्मा में और यह सुख हमें बहोत काम आने वाला है आने वाले दिनों में।

हम विचार करें बाबा कि संस्कार कैसे है? क्षमाशील, विश्व कल्याण, रहमदिल और सब को प्यार देने का दातापन का संस्कार लेने का कुछ नहीं देने का ही संस्कार। देने वाला सदा ही महान होता है, लेने वाले? वोह भी महान होते है? देने वाले तो सदा ही महान होता है और लेने वाले सदा ही मांगते ही रहते है, मांगने के सस्कार पड़ जाते है, अपने पास सब कुछ होते हुए भी नजर कहाँ जाती है? दुसरो कि अच्छी चीज पर। बाबा बहोत अच्छी बात सिखाते है मुझे साकार के समय से ही बाबा का यह शब्द बहोत प्यार लगता था आपने सुना है फिर से सुने - **तुमको वफादार बनना है, वफादार माना तुम्हारी आँख खिन भी डूबे नहीं, ना किसी कि सुंदरता में, ना किसी कि धन सम्पन्ति में, ना किसी कि पर्सनल चीजे। आँख डूबे नहीं समजते है ना इसका अर्थ? आँख नहीं डूबे हम तो दाता है, सब से महान है, भरपूर है, पूर्वज, देने वाले है हम भी दाता बन कर रहे। मांग ने वाले कभी माननीय नहीं बनते। माननीय बनना है तो मान दो स्वमान में रहो।** मान केवल स्थूल बात नहीं है दूसरे के विचारों का सम्मान करना बहोत इम्पोर्टेन्ट चीज है दिल से दुसरो के प्रति ऊँची भावना रखना यह सम्मान है। जैसे देवी देवताओं के मंदिर में लोग सम्मान देते है ना? भाई अंदर जायेंगे तो जूते बहार निकल के जायेंगे सामने से भी गुजरेंगे नमन करके गुजरेंगे, सम्मान देकर गुजरते है। हमारे भारत कि यह कल्चर ही थी बड़ो को सम्मान देना अब यह ख़त्म हो गई है। हम फिर से यह परंपरा प्रारम्भ करते है सब को सम्मान देना इससे हम माननीय बन जाते है संसार हमें सम्मान देगा, हमारा चित बाबा कि तरह ही क्षमा भाव से, रहम भाव से, विश्व कल्याण के भाव से भरा हुआ होना चाहिए।

बहोत सुंदर बातें है यह आज मनुष्य के चित में बदले का भाव ज्यादा भरा हुआ है, इस बदले कि भावना ने ही क्रोध का भाव भर दिया है बहुतो के प्रति मन में क्रोध रहता है, सूक्ष्म छुपा हुआ रहता है हम इनसे बदला लेंगे, इन्हे थिक करेंगे, इन्होने ऐसा बुरा बुरा किया है लेकिन बदला लेने वाले कभी महान नहीं बनते, महान बनते है क्षमा कर देने वाले। थिक है ना? गायन किन का है? जिन्होंने क्षमा दान दिया, गायन उनका नहीं है जिन्होंने बदला लिया, महान पुरुष वोह हुए जो क्षमादान देते रहे बदले लेने वालों को इतिहास उलटी दृस्टि से ही देखता है। यह ख़राब लोग थे जिन्होंने बदला लिया है, जिन्होंने दुसरो के क्षमा भाव को भी गलत लिया वोह खुद भी नष्ट होंगे, उनकी वंसवाली भी नष्ट हो गई उनका नाम नहीं रहा और जिन्होंने क्षमा भाव दिखाया दुस्मनो पर भी इतिहास भी उनका नाम लेता है उनको महान कहता है।

देखो आपने सम्राट अशोक का नाम सुना है उसके साथ यह बात जोड़ दें, अशोक ग्रेट महान, बहोत सारे इतिहासकार पूछते है अशोक क्यूँ महान था? उसने तो यह किया, यह किया लेकिन पीछे किया महान जब से बना तब से वोह बहोत

महान रहा। बुद्ध धर्म के लिए सारा काम अशोक ने ही तो किया, अहिंसा का पार्ट उसने ही तो सिखाया सब को। तो हम अपना चित कल्याण कि और शुभ भावनाओ से भरें, कल्याण कि भावनाएं शुभ भावनाएं सभी रोज कुछ क्षणो के लिए अपनी छत पर जाकर जरा विचार किया करें मुझे तो विश्व का कल्याण करना है, हम विश्व कल्याणकारी है, जन्म जन्म भी जिन आत्माने हमें कष्ट दिया है हम उन्हें भी क्षमादान देते है। कट जायेगी बंधन रस्सियां हमसे अच्छे वाइब्रेशन्स संसार को जाने लगेंगे एक बहोत बड़ा काम हमारे द्वारा होना है क्यूंकि हम सब पूर्वज है। हमारी विश्व कल्याण कि भावना ही विश्व का कल्याण करेगी, हमारी शुभ भावनाएं ही इस संसार कि अनेक दुखी आत्माओ को सुख देंगी, ध्यान दें सभी कौन है हम सब? पूर्वज, महान आत्माएं, इष्ट देव देवियाँ। अंडर लाइन कर लें हमारी शुभ भावनाएं संसार कि दुर्भावनाओ को समाप्त करेगी, हमारी शुभ भावनाएं इस संसार कि कमजोर मनुष्य आत्माओ के लिए सहारा बन जायेगी, हमारी शुभ भावनाएं दुसरो के जीवन में सुखो का संचार करेगी।

हम बहोत महान है। बाबा कि ब्लेसिंग, स्वयं भगवान् के वरदान हमारे साथ है उनको पहचानते हुए सभी अब महानता के पथ पर चलेंगे। सेवा में आप सब आयें है भरपूर हो कर जाएँ यहाँ से अच्छे स्वमान का अभ्यास करते हुए, सवेरे और सामके अच्छे समय को बिताते हुए सभी यहाँ से अपने भण्डार भरपूर करके ही जायेंगे।

-: ओम शांति :-

-: क्लास के चुने हुए पॉइंट्स :-

- ✓ हमें साक्षात्कार भी होंगे और हम भी साक्षात्कार कराएँगे और साक्षात्कार कराना यह उनके द्वारा ही होगा जो बाप सामान होंगे।
- ✓ तुरंत करो, अभी अभी करो। जो डिले करते जो चलते रहते है आज नहीं कल करेंगे वोह बाबा को पसंद ही नहीं थे। अभी करो इसको ही बाबा फरमानबरदार कहते, फरमान मिला और करने लगे इससे ही भोलानाथ राजी हो जाता है, वरदान दे देता है।
- ✓ सब कुछ सुख सुविधाएं हो और फिर हम उसकी आज्ञा का पालन करें तो हमारा महत्व नहीं, कुछ ना हो असम्भव हो वोह चीज और हम बाबा कि आज्ञाओं का पालन करें।
- ✓ हम द्वापरयुग से जिन मनोविकारो के वश रहे थे जिन्होंने उन मनोविकारो को नष्ट नहीं किया है उसमें भी काम क्रोध आने वाले समय में यह दोनों विकार मनुष्यो को बहोत सतायेंगे और बहोत लोग ज्ञान छोड़ कर चले जायेंगे।
- ✓ अगर योगबल अच्छा नहीं है तो उनमें क्या दिखाई देगा? चिड़चिड़ापन, व्यवहार कि कटुता, बढ़ता हुआ ईर्षा द्वेष, आलश्य।
- ✓ जो ज्ञान में अंत तक जीना चाहते है और संसार के परिवर्तन का सुंदर खेल देखना चाहते है उन्हें अपनी पवित्रता कि शक्ति को बहोत बढ़ाना होगा।
- ✓ सभी का भाग्य अपना अपना है चिंता कि बात नहीं अब भाग्य बढ़ाना है भाग्य हमारे हाथ में आ गया है हम उसको जितना चाहे बढ़ालें।
- ✓ चारो युग मनुष्य आत्माएं भाग्य के वश रही है भाग्य निर्माण भी किया है कर्म से।
- ✓ प्रतिक्षण यदि तुम देह भान का त्याग करते हो तो प्रतिक्षण ही तुम्हारा श्रेस्ठ भाग्य निर्माण होता है।
- ✓ जो बच्चे साक्षी भाव में स्थित रहते है उनका एक मास का काम एक घंटे में ही पूरा हो जाता है।

- ✓ यदि हम दुखी होते रहेंगे तो दुसरो के दुःख कैसे मिटाएंगे?
- ✓ निर्वाण में कौन ले जा सकेंगे? जो कारणो का निवारण करेंगे इसका अर्थ है कोई भी कारण हमें श्रेस्ठ पुरुषार्थ से रोक ना पाएं।
- ✓ जिन्होंने लम्बा काल हर तरह का पुरुषार्थ केवल योग का ही नहीं दुखो से मुक्त रहने का, अचल अडोल रहने का, एक रूस स्थिति में रहने का, त्याग और वैराग्य अपनाने का, लम्बा काल अभ्यास किया है साक्षी भाव का वोह स्थिर रेह पाएंगे।
- ✓ अतीन्द्रिय सुख उन्हें प्राप्त होता है जो आत्म अभिमानी होकर रहते है। तुम्हारा सब से बड़ा सब्जेक्ट है आत्म अभिमानी होना, आत्मा के सातों गुणो का स्वरुप बन जाना।
- ✓ मांग ने वाले कभी माननीय नहीं बनते। माननीय बनना है तो मान दो स्वमान में रहो।